[This question paper contains 5 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3316 A

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : हिन्दी कविता (रीतिकालीन काव्य) Hindi Kavita (Ritikaleen Kavya)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi – CBCS

Semester : II

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. केशव रचित श्रामचंद्रिकाश के वन-गमन प्रसंग के भाव-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नीतिकाव्य परंपरा में रहीम के योगदान का विवेचन कीजिए। (12)

P.T.O.

2. बिहारी के काव्य में अभिव्यक्त शृंगार-भावना का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य-सौन्दर्य का सोदाहरंण विवेचन कीजिए। (12)

3. घनानंद के काव्य में अभिव्यक्त सौंदर्य-चेतना का विवेचन कीजिए।

अथवा

घनानंद के काव्य में निहित प्रेम के स्वरूप को संपष्ट कीजिए। (12)

4. भूषण की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यंजित नैतिक आदर्शों पर प्रकाश डालिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) तुम क्यों चलौ बन आजु। जिन सीस राजत राजु।
जिय जानियै पतिदेव। करि सर्व भाँति सेव।
पति देइ जौं अति दुख्ख। मन मानि लिजै सुख्ख।
सब जक्त जानि अमित्र। पति जानि केवल मित्र।

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।

अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।

ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँके तीन ।। (8)

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।

जा तन की झाँई परैं, स्थामु हरित-दुति होई।

रनित भृंग-घंटावली, झरित दान मधु-नीरु।

मंद-मंद आवतु चल्यौ, कुंजरु कुञ्ज-समीरु।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै।

त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।

एक ही जीवन हुतौ सु तौ बार्‌यौ सुजान संकोच और सोच सहारियै।

रोकी रहै न दुई घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।

(7)

6. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 450 शब्दों में) उदघाटित कीजिए :

(क) घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज ।।
उन हरकी हँसी कै, इतें इन सौंपि मुसकाइ।
नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ ।।

(भाव-सौंदर्य)

(ख) इंद्र जिम जंभ पर बाड़े व ज्यौं अंभ पर, रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम-अंस पर, कान्ह जिम कंस पर, यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है।

(शिल्प-सौंदर्य)

(ग) साईं बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनि आवै साईं ।।

(नीति–सौंदर्य)

(घ) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार है धार–मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन–बाँधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू।।

(रस–व्यंजना)

(6+6=12)

(100)